विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी - 41, सेक्टर - 12, नोएडा

ई - पत्रिका (अंक -19) मई - 2022

ज्ञानोदय

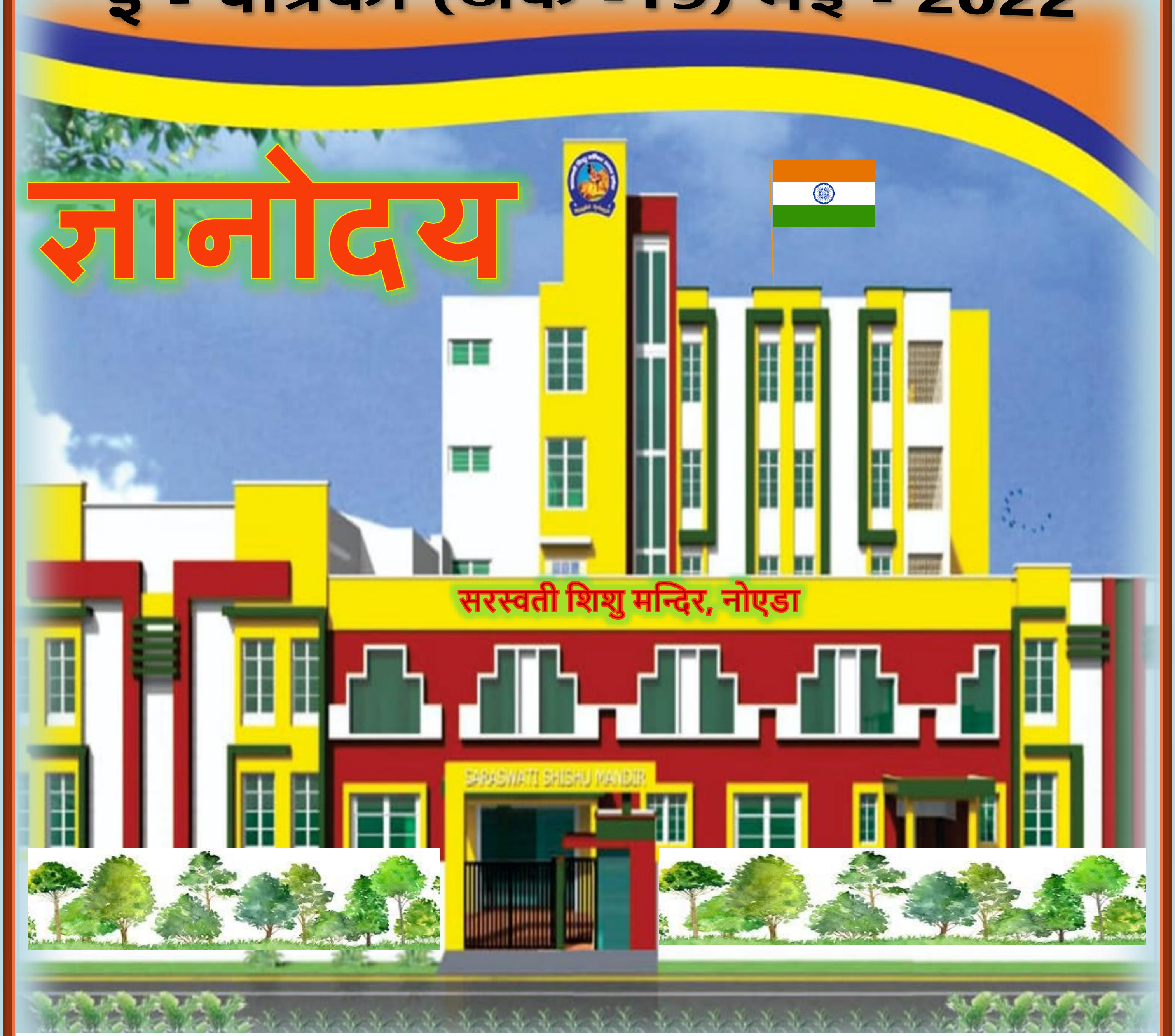
सरस्वती शिशु मन्दिर, नोएडा
SARASWATI SHISHU MANDIR

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर , सी - 41 , सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई - पत्रिका मई – 2022

ज्ञानोदय (अंक - 19)

संरक्षक

श्री प्रताप मेहता

श्री दिनेश गोयल

श्री रविन्द्र कुमार

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री सुशील कुमार

श्री असित कुमार त्यागी

मार्गदर्शक

श्री प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक

श्री बलवीर सिंह (आचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह, श्री दीपक कुमार

रेखा सिन्हा

क्रम - सूची

- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- संपादकीय
- शिशु भारती गठन
- विद्या प्रवेश कार्यशाला
- प्रश्नोत्तरी (ENGLISH)
- मिट्टी बचाओ प्रतियोगिता
- अभिभावक अभिव्यक्तियाँ
- मातृ शक्ति गोष्ठी
- ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लाभ
- NEP(National Education Policy)कार्यशाला
- अमृतवाणी
- बच्चों का कोना

प्रधानाचार्य जी की कलम से...

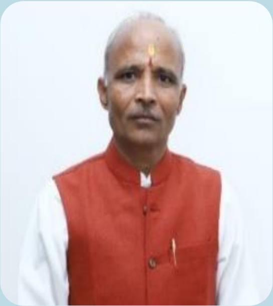

तुलसी की पत्तियों से विभिन्न रोगों का उपचार-

उल्टी में - तुलसी की पत्तियों का रस पीने से उल्टी बंद हो जाती है। शहद एवं तुलसी का रस मिलाकर चाटने से भी उल्टी, जी मिचलाना ठीक हो जाता है।

कुकुर (काली) खांसी में - तुलसी के पत्ते और काली मिर्च समान मात्रा में पीसकर, इसकी मूंग के बराबर गोलियां बना लें । एक-एक गोली चार बार दें । इससे कुकुर (काली) खांसी ठीक हो जाती है।

मलेरिया ज्वर में - तुलसी की पत्तियां नित्य खाने से मलेरिया जोर नहीं रहता।

दांत दर्द में - तुलसी का रस, काली मिर्च पीसकर गोली बना लें । इस गोली को दुखते दांत के नीचे दबाए रखने से दांत दर्द शांत होता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त भी तुलसी के पत्ते व अर्क का भिन्न-भिन्न प्रकार से भिन्न-भिन्न व्याधियों को शांत करने में प्रयोग होता है।

प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादकीय...

सभी पाठकों को मेरा सादर प्रणाम!

परिवार में जन्म लेकर व्यक्ति धीरे-धीरे वृहद इकाई समाज का अंग कहलाता है । प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वह समाज के अनुसार ढलता रहता है । उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में निखार आने लगता है । समाज इस अवस्था का आकलन करने लगता है । हम यह न भूलें कि पारिवारिक दायित्व के साथ-ही-साथ हमारा सामाजिक दायित्व भी होता है । भौतिक सुख- सुविधाएं एवं उपलब्धियां प्राप्त कर अपने आपको सफल मान लेना जीवन में एकांगी पक्ष है। अपने राष्ट्र के प्रति हमारा कर्तव्य होता है । यह दायित्व-बोध ही हमें कर्तव्य पालन के लिए सदैव प्रेरित करता है। कर्तव्य पालन तभी संभव हो पाता है, जब हमारा चिंतन और मनन इस ओर उन्मुख होता भी रहे। इन्हीं संकल्पनाओं को सजीव करने के लिए कवि गोपालदास 'नीरज' का संदेश है -

छिप-छिप अश्रु बहाने वालों, मोती व्यर्थ बहाने वालों।
कुछ सपनों के मर जाने से, जीवन नहीं मरा करता है।।
लाख करे कोशिश पतझड़ पर, उपवन नहीं मरा करता है।
चंद खिलौनों के खोने से, बचपन नहीं मरा करता है।

अर्थात- जिंदगी जिंदादिली का नाम है। जो जिंदा दिल है, उसे ही जीने का अधिकार है।

उक्त चिंतन को हम तीन आयामों में देखते हैं - (1) सफल जीवन, (2) सार्थक जीवन, (3) संतुलित जीवन।

अतः हम स्वयं निर्णय करें कि जीवन को सफलता के पश्चात सार्थक बना सकने के लिए क्या करें? यदि जीवन सार्थक नहीं हो सका तो संसार में आना और चले जाना मात्र एक श्रम ही होगा। संकल्प लेकर जीवन जिएं और साध्य के लिए साधकों को समर्पित कर दें।

पत्रिका में त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ । सभी पाठकों से आशा है कि आप पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझावों से अवगत कराएंगे।

बलवीर सिंह
सम्पादक

शिशु भारती गठन

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

ज्ञानयज्ञ
विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद्, नोएडा
शिक्षा
योग
खेल
नृत्य
श्रीमद्भागवत कथा
ज्ञानयज्ञ

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद्, नोएडा
शिक्षा
योग
खेल
नृत्य
श्रीमद्भागवत कथा
ज्ञानयज्ञ
श्री
ॐ

भारत
सहयोग - भारत वि

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सेक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
खेल
नृत्य
श्रीमद्भागवत कथा
ज्ञानयज्ञ
श्री
ॐ
卐

सरस्वती शिशु मंदिर, सेक्टर – 12, नोएडा में आज दिनांक 7 मई को रवींद्रनाथ टैगोर की जयन्ती का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन से हुआ । कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान प्रकाश वीर जी ने की तथा कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की आचार्या श्रीमती अलका सक्सेना जी ने किया। इस अवसर पर विद्यालय की आचार्या संगीता गोयल ने रवींद्रनाथ टैगोर के जीवन का वर्णन किया। इस अवसर पर विद्यालय के शिशु भारती के पदाधिकारियों को उनके दायित्व का बोध कराते हुए शपथ भी दिलाई गई।

अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने रवींद्रनाथ टैगोर की जयन्ती के महत्व पर प्रकाश डाला तथा बच्चों को शिशु भारती के महत्व को समझाया । इस अवसर पर विद्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा ।

विद्या प्रवेश कार्यशाला

सरस्वती शिशु मन्दिर नोएडा
जिला स्तर पर विद्या प्रवेश
कार्यशाला
सत्र - 2022-23
FIRST

THIRD MONTH
SECOND MONTH
FIRST MONTH

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12

सरस्वती शिशु मन्दिर नोएडा
जिला विद्या प्रवेश
शाला
THIRD MONTH
SECOND MONTH
FIRS MONT
प
र
त

दिनांक- 07.05.2022 को जिला स्तरीय विद्या प्रवेश पर आयोजित कार्यशाला।

प्रश्नोत्तरी (ENGLISH)

Class-1st

1.How many letters are there in English alphabet ? 26

2.How many Vowels are there in English alphabets? 5

3. How many consonants are there in English alphabets ? 21

4. How many months are there in a year ? 12

5. How many days are there in a week ? 7

6. Which is the first month of the year ? January

7. Which is the 6th day of the week ? Saturday

8. What is the plural of Flag ? Flags

9. Join the letters M+A+P . MAP

10Jumbled words TAC . CAT

11.The young one of cow is______. Calf

12.Opposite word. Start Finish Open Close

13.Write 2 words of vowel 'a'. Mat , Bat

14.Write 2 words of vowel 'e'. Men , Den

15.Write 2 words of vowel 'i' . Dig , Fig

16.Write 2 words of vowel 'O' . Log , Fog

17.Write 2 words of vowel 'u' . Fun , Run

18.Complete the word T_ _ th. Teeth

19.Name the flower which is red in colour ? Rose

20.What is the colour of sky ? Blue

21.What is the colour of leaf ? Green

22.Name the fruit which is yellow in colour ? Mango

23.What is the name of our country ? India

24.Which is our national bird ? Peacock

25.Which is our national flower ? Lotus

(1)Opposite of new. (Old)

(2)Opposite of always. (Never)

(3) Opposite of sit. (Stand)

(4)Opposite of give. (Take)

(5) Opposite of night. (Day)

(6)I see with my _____. (Eyes)

(7)We hear with our_____. (Ears)

(8)We walk with our _____. (Legs)

(9)We taste with our _____. (Tongue)

(10)We chew with our_____. (Teeth)

(11)Sound of cow. (Moo)

(12)Sound of dog. (Bark)

(13) Sound of donkey. (Bray)

(14)Name of person, place, animal and things arecalled. (Noun)

(15)Plural of mango. (Mangoes)

(16)Plural of box. (Boxes)

(17)Plural of tooth. (Teeth)

(18)Plural of mouse. (Mice)

(19) A_______is a word used in place of noun. (Pronoun)

(20)Change the gender of Bull. (Cow)

(21)Change the gender of Son. (Daughter)

(22)Rhyming word of round. (found)

(23)Rhyming word of men. (Hen)

(24)The book is _____the table. (on)

(25)The pencil is ___ the bag. (in)

Class - 3rd

Q. 1 How many vowels are there in the English Language? (Five)

Q. 2 what does the cow eat? (The cow eats green grass and straw)

Q.3 when do we celebrate Republic day? (26 January)

Q.4 How many legs does a dog have? (four)

Q. 5 where should we cross the road? (zebra crossing)

Q. 6 write the name of vowels? (a, e, I, o, u)

Q.7 How many letters are in the English alphabet? (26)

Q. 8 How many types of article ? (two)

Q. 9 write the word which rhymes with wealth ? (Health)

Q. 10 what is the present form of caught ? (catch)

Q.11 what is the plural of woman ? (women)

Q. 12 what is the plural of child ? (children)

Q. 13 Definition of noun..(Naming words are called noun)

Q. 14 Give the example of material noun ? (gold, silver, wood, iron, marble)

Q. 15 whose instructions should we follow at the crossing ? (Traffic police)

Q. 16 what is a baby cat called ? (kitten)

Q.17 what is a baby sheep called ? (Lamb)

Q18 what is the past form of save (saved)

Q. 19 opposite of sir ? (Madam)

Q. 20 what is the past form of request ? (requested)

Q. 21 what is gender ? (Gender tells that the noun is male or female)

Q. 22 what is the opposite gender of king ? (Queen)

Q. 23 what is pronoun? (A pronoun is a word which is used for a noun)

Q. 24 How many numbers in English language ? (Two numbers – 1 singular 2-plural)

Q. 25 what can we get after Ganesha's worship ? (knowledge, wealth, prosperity and healt)

Class- 4th

Q.1- What is the capital of Bharat?(New Delhi)

Q.2- What are easy and cheap means of communication?(letters)

Q.3- What does every Bhartiya sing on 15th August?(national anthem)

Q.4- Where does the president of Bharat reside?(in the Rashtrapati bhavan)

Q.5- Who did get the world's highest price the" Nobel prize"?(CV Raman)

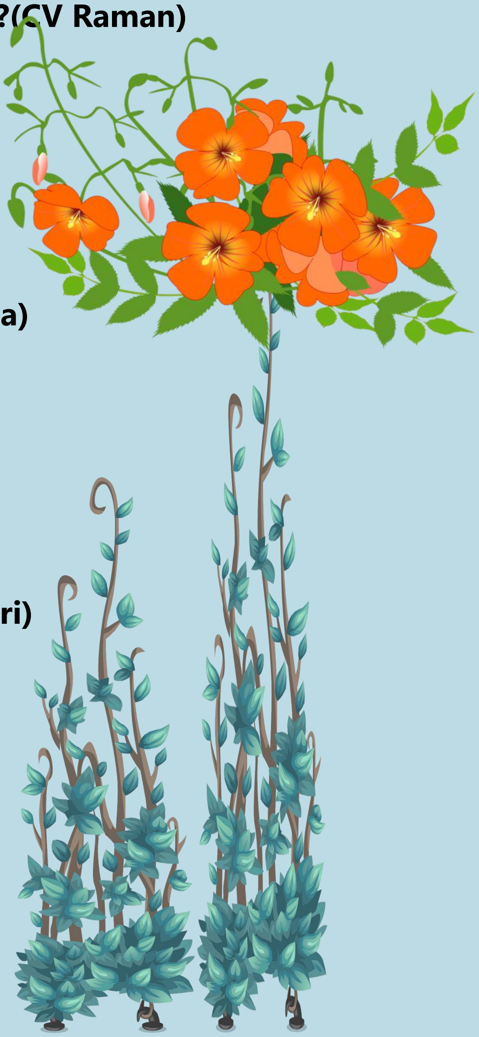

Q.6- How many types of letters we use?(two)

Q.7- What is the antonym of forget?(remember)

Q.8- What is the synonym of trip?(journey)

Q.9- What was the name of Kiran bedi's mother?(Mrs premlata)

Q 10- Who does solve doubts of people'sminds?(the teacher)

Q.11- Which is the holiest river of Bharat?(the Ganga)

Q.12- Where does the Ganga join the sea? (In Ganga Sagar)

Q.13- What was the name of CV Raman's wife?(Mrs lok sundari)

Q.14- Where was Rani Lakshmi Bai born?(at Kashi)

Q.15- Where was Rani Lakshmi Bai born? (At Kashi)

Q.16- Who was Gangadhar Rao? (The King of Jhansi)

Q.17- When did Bharat get freedom? (15th August 1947)

Q.18- What is the opposite of credible? (Incredible)

Q.19- How many colors does the Rainbow have?(7 colours)

Q.20- Who was a great women leader in the war of 1857? (Rani Lakshmi Bai)

Q.21- When was Rani Lakshmi Bai born? (19 November 1835)

Q.22- What is the adjective of honest? (Honesty)

Q.23- The place where we buy tickets (ticket window)
Q.24- The man who cheque railway tickets (T.T.E.)
Q.25- What is the antonym of empty? (Full)

Class - 5

Q1. Which type of sentence is ‘Do your duty’? (Impretive)

Q2.Which type of sentence is ‘God bless you’? (Optative)

Q3.Which type of sentence is ‘How pretty you are’?(Exclamatory)

Q4.Which type of sentence is ‘Honesty is the best policy’?(Assertive)

Q5.How many parts of a sentence are there? (Subject & Predicate)

Q6. How many parts of speech are there? (There are eight parts of speech)

Q7.Which type of noun ‘judgement’ is? (Abstract noun)

Q8.Which type of noun ‘army’ is?(collective noun)

Q9Make abstract noun from young.(youth)

Q10.Make abstract noun from know.(knowledge)

Q11.Make abstract noun from live.(life)

Q12.What is the Plural of mother-in-law? (mothers-in-law)

Q13.What are the examples of demonstrative pronoun? (those,these,this,that)

Q14.Which type of pronoun ‘myself’ is? (reflexive pronoun)

Q15.What is the positive degree of best? (good)

Q16.What is the comparative degree of bad? (worse)

Q17.What is the superlative degree of much? (most)

Q18.A VERB that requires an object to complete its meaning by themselves is (Transitive verb)

Q19.Write some examples of adverb of manner.(fluently,fast,timidly,carefully)

Q20.Write some examples of adverb of frequency.(once,twice,often many times)

Q21Which preposition is used before days? (on)

Q22.Which preposition is used before time? (at)

Q23.Which preposition is used after fond, afraid and tired? (of)

Q24.Which preposition shows period of time? (for)

Q25.Which preposition shows point of time? (since)

मिट्टी बचाओ प्रतियोगिता

2022/5/19 09:03

Save Soil
2022/5

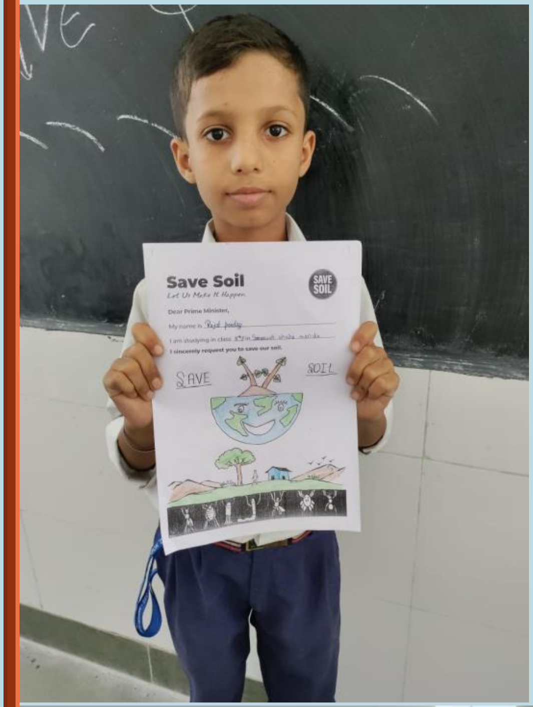
Save Soil
Let Us Make It Happen
SAVE SOIL
Dear Prime Minister,
SAVE SOIL!

SOIL
Save Soil
Let Us Make It Happen
SAVE SOIL

Save Soil
Let Us Make It Happen
SAVE SOIL
Dear Prime Minister,

Save Soil

Save Soil

Save Soil

Save Soil
Let Us Make It Happen
SAVE SOIL
Dear Prime Minister,

दिनांक-19.05.2022 को विद्यालय में मिट्टी बचाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

सरस्वती शिशु मन्दिर के विषय में विचार एवं सुझाव

सरस्वती शिशु मन्दिर एक ऐसी संस्था है जहाँ हमारे शिशु ज्ञान की रोशनी से जगमगाते है। यहाँ पर संस्कृति से ओत-प्रोत शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद व अनेक प्रकार की गतिविधियों द्वारा शिशुओं का विकास किया जाता है। सरस्वती शिशु मन्दिर सर्वांगीण विकास का एक मुख्य केन्द्र है। जहाँ शिशु के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास को ध्यान में रखकर क्रिया कलापों का निर्धारण किया जाता है। विद्यालय में छोटे-छोटे क्रिया कलापों एवं कार्यक्रम आयोजित करने से शिशुओं का विकास निरन्तर होता रहता है। शिशु की क्षमताओं का विकास निरन्तर गतिशीलता से ही सम्भव है। यहाँ पर शिशुओं को संस्कार दिये जाते है जो माता-पिता शिशुओं को नहीं दे पाते। इस विद्यालय में बड़ों के प्रति आदर की भावना व छोटों के प्रति प्यार की भावना सिखाते है जो अन्य विद्यालयों में नहीं सिखाया जाता है। यहाँ पर शिशुओं की सुख-सविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाता है। मुझे इस संस्था के क्रियाकलापों से बहुत खुशी है।

सोनम सिंह

अंश सिंह (5th B)

सरस्वती शिशु मन्दिर के विषय में विचार एवं सुझाव

विद्यार्थियों के बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक आदि सर्वांगीण विकास के लिए सरस्वती शिशु मन्दिर एक बहुत ही अच्छी संस्था है। यहाँ विद्यार्थियों में बचपन से ही देश भक्ति की भावना, संस्कार, शिष्टाचार तथा अनुशासन जैसे गुणों को प्रार्थमिकता दी जाती है। इसके अतिरिक्त अध्यापक अभिभावकों की समस्याओं को धैर्य पूर्वक सुनते हैं और उनका समाधान भी करते हैं । इन संस्थाओं में शिशुओं को शिक्षा के साथ-साथ संस्कार एवं संस्कृति से ओत-प्रोत शिक्षा दी जाती है। यह संस्था समाज को निरन्तर जोड़ने का कार्य करती है। शिशुओं में ऐसे सद्गुणों का विकास किया जाता है जिनमें सन्तों, महापुरूषों, विद्वानों एवं समाज सेवकों का स्मरण कराते रहते हैं । इन संस्थाओं में महापुरूषों की ज्यंतियाँ तथा बौध कथा के माध्यम से शिशुओं का बौद्धिक विकास किया जाता है। शिशुओं के विकास के लिए समय-समय पर पी0टी0एम0 का आयोजन किया जाता है। यह बहुत ही अच्छी प्रक्रिया है।

सुषमा चौहान

तविश चौहान(5TH B)

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में विचार एवं सुझाव

21वीं शताब्दी की वैश्विक अर्थव्यवस्था ऐसे वातावरण में उन्नति कर सकती है जो रचनात्मक एवं काल्पनिक विवेचनात्मक सोच और समस्या के समाधान से संबंधित कौशल पर आधारित हो। कुछ महीनों पहले देश के प्रधानमंत्री जी नरेंद्र मोदी जी ने अपने एक उद्बोधन में गुणवत्ता के महत्व पर इन शब्दों में जोड़ दिया था अब तक सरकार का ध्यान देश भर में शिक्षा के प्रसार पर था किंतु अब वक्त आ गया है कि ध्यान शिक्षा की गुणवत्ता पर दिया जाए एक छात्र की अध्ययन प्रगति का आकलन करना शिक्षक की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक है विद्यालयों का विभिन्न आयामों में लगातार मूल्यांकन की जाने की आवश्यकता है ताकि सुधार की आवश्यकता का समावेशन किया जा सके।

जहां बच्चे विद्यालय शिक्षा का केंद्र होते हैं बच्चों के ज्ञानार्जन सुनिश्चित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अध्यापक की होती है। इस तथ्य की पुष्टि सरस्वती शिशु मंदिर पूर्ण रूप से करता है।

अजय भारद्वाज

वंशिका भारद्वाज, 4 B

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में आपके विचार व सुझाव

. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सरस्वती शिशु मंदिर अच्छा विकल्प स्वीकार किया जा सकता है। यहां कई प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जैसे बौद्धिक, शारीरिक, वैदिक गणित प्रश्न मंच आदि।
हमारा लक्ष्य इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का विकास करना है जिसके द्वारा ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण करना है जो हिंदुत्व निष्ठ और राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हो। शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सकें। सामाजिक कुरीतियां, शोषण व अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्रीय जीवन को समृद्ध, संपन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो। शिशु मंदिर योजना का धयेय चिंतन(सिंह शावक के दांत गिनते भरत का चित्र) श्रद्धेय वाक्य “स्वयंमेव मृगेंद्रता” की रचना कर एक अप्रतिम संदेश दिया है।

मनोज कुमार त्यागी

आराध्या त्यागी, चतुर्थ –ब

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में विचार एवं सुझाव

सरस्वती शिशु मंदिर बहुत अच्छा विद्यालय है। यह एक प्रसिद्ध विद्यालय है इस विद्यालय में शिक्षा ही नहीं बल्कि बहुत अच्छा ज्ञान भी मिलता है बच्चों को संस्कार भी दिए जाते है। भागदौड़ भरी जिंदगी में माता-पिता अपने बच्चों को वह संस्कार नहीं दे पाते। वो संस्कार सरस्वती शिशु मंदिर में अध्यापक- अध्यापिका बहुत ही सुन्दर तरीके से समझाते हैं। मुझे गर्व महसूस होता है कि हमारे बच्चे इस विद्यालय के विद्यार्थी हैं।

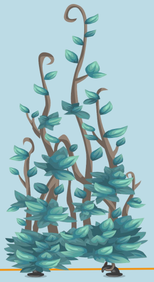

सिया देवी

देविका, 2nd-B

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में विचार एवं सुझाव

संघ परिवार सरस्वती शिशु मंदिर की शिक्षा प्रणाली को अभिनव रूप में मानते हुए इसका प्रसार करता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सरस्वती शिशु मंदिर अच्छा विकल्प स्वीकार किया जा सकता है। यहां कई प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जैसे बौद्धिक, शारीरिक, वैदिक आदि। यह एक ऐसी संस्था है जिसमे व्यक्ति जीविका चलाने के एकमात्र उद्देश्य से ऊपर उठकर समाज के बारे में सोचता है और कुछ करने का प्रयत्न भी करता है।

सरस्वती शिशु मंदिर की योजनाओं के तहत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ साथ नैतिक शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास पर भी बल दिया जाता है। साथ ही साथ रामायण एवं महाभारत की पुस्तकों को पाठयक्रम में शामिल करना भी अत्यधिक लाभप्रद सिद्ध हुआ है। इससे बालकों को संस्कृति के बारे में और अधिक ज्ञान प्राप्त होगा एवं उन्हें किस दिशा में अपने व्यक्तित्व का विकास करना है, यह मार्ग भी प्रशस्त होगा। सरस्वती शिशु मंदिर सत्यम शिवम सुंदरम तथा वसुदेव कुटुम्बकम की संस्कृति का विकास बालकों में करने के लिए निरंतर अग्रसर रहा है।

सुझाव:सरस्वती शिशु मंदिर के लिए मेरा सुझाव है कि आज के युग में जहां विद्यालय संस्कारों एवं देशभक्ति की भावना को विद्यार्थी के अंदर जगा रहा है उसके साथ- साथ आज की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए अंग्रेजी की बोलचाल पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

कृति अग्रवाल

शिवन्या अग्रवाल, तृतीय-ब

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में विचार एवं सुझाव

सरस्वती शिशु मंदिर बच्चों के सर्वांगीण विकास का सबसे उत्तम स्थान है। बच्चों को आधुनिकता के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक, शिक्षा, देशभक्ति और देश के गौरवशाली इतिहास की भी शिक्षा दी जाती है। विद्यालय की शिक्षा-पद्धति हिन्दू संस्कार, भावी सभ्य और स्वस्थ समाज का निर्माण करती है । जिसकी आज अत्यधिक आवश्यकता है।मंचीय कार्यक्रमो का भी महत्वपूर्ण योगदान है जो बच्चों मे आत्मविश्वास भर देता है।

समय समय पर होने वाले संस्कृतिक कार्यक्रम इसका अच्छा उदहारण है। स्वामी विवेकानन्द, नेता जी सुभाष चंद्र बोस, वीर सावरकर आदि महापुरुषों की शिक्षाएं अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालय मे खेल- कूद व्यायाम योग आदि पर विशेष बल दिया जाता है।देश के सच्चे वीर- वीरांगनाओं और महापुरुषों का जो चित्रण होता है वो अतुलनीय है।समय- समय पर मिलने वाली मासिक पत्रिका एवं ई-पत्रिका हमारा मार्ग दर्शंन करती रहती है। विद्यालय का अनुशासन अत्यंत सराहनीय है।

विद्यालय प्रबंधन से विनम्र अनुरोध है कि अन्य भाषाओं के साथ संस्कृत भाषा पर भी विषेश ध्यान अभी से दिया जाए जिससे वेद, उपनिषद, गीता और वैदिक ज्ञान- विज्ञान मे भी बच्चों मे रुचि उत्पन्न हो।

पूजा रानी

अद्विक दुबे, यू के जी-बी

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में विचार एवं सुझाव

बालक की शिक्षा के लिए यह विद्यालय अति उत्तम है। यहां शिक्षा के साथ साथ बालक को संस्कार भी दिए जाते हैं। समय- समय पर आने वाले हिंदू त्योहारों का महत्व भी बताया जाता है। जिससे हमें अपनी संस्कृति का भी ज्ञान होता है। विद्यालय में बालक की सुरक्षा एवं सफाई आदि का भी ध्यान रखा जाता है।

रेखा बिष्ट

युग बिष्ट, प्रथम-ब

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में विचार एवं सुझाव

शिक्षा बच्चों की वह साधना है जिससे बच्चों को लक्ष्य की प्राप्ति होती है और जब हमें अच्छे विद्यालय में जाने का अवसर मिले तो हमारा लक्ष्य और भी आसान और नजदीक हो जाता है। सरस्वती शिशु मंदिर में बच्चों को पढ़ाई के साथ -साथ संस्कार भी दिए जाते हैं जो आज की पीढ़ी भूलती जा रही है। लेकिन यह सब मेरे बच्चों को इस विद्यालय में आने के बाद सीखने को मिला। मैंने अपने बच्चों में बहुत से बदलाव देखे हैं जो शायद मुझे कहीं और देखने को नहीं मिलते।

ललिता रावत

छवि रावत, प्रथम-ब

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में विचार एवं सुझाव

सर्वप्रथम योजना का पहला दीप गोरखपुर के पक्कीबाग़ नामक स्थान पर प्रज्वलित हुआ। विद्यालय का नाम सुविचारित ढंग से रखा गया, “सरस्वती शिशु मंदिर”। श्रद्धेय भाऊराव देवरस की प्रेरणा एवं स्वनामधन्य नानाजी देशमुख सहित गोरखपुर के क्रियाशील कार्यकर्ताओं ने इस कार्य को आरंभिक स्वरूप दिया।

सरस्वती शिशु मंदिर में उच्च गुणवत्ता पूर्ण पढ़ाई के साथ संस्कार भी बच्चों को दिया जाता है। बालक के सर्वांगीण विकास हेतु आचार्य, प्रधानाचार्य एवं अभिभावकों के बीच गहन विचार- विमर्श के लिए समय- समय पर गोष्ठी का अयोजन किया जाता है। विद्यालय की व्यवस्था के साथ-साथ विद्यालय के भैया/बहनों की उपलब्धि के बारे में अभिभावकों को जानकारी के साथ ही नई शिक्षा नीति के उद्देश्य एवं विशेषताओं के बारे में अभिभावकों को अवगत किया जा रहा है। गोष्ठी में अभिभावकों के साथ लिखित एंव मौखिक रूप से विचार विमर्श का कार्यक्रम रखने से बालक के विकास में पारदर्शिता आती है जो अभिभावक एंव शिक्षक दोनों मिलकर ठीक कर सकते हैं।

स्वाति शर्मा

यश भारद्वाज, एल.के.जी.-बी

उत्तर-

1- सीता, 2 - द्रुपद राजा की (यज्ञ में उत्पन्न होने से उन्हें यज्ञ कन्या भी कहा जाता है) 3 - गार्गी

1. अरुंधती, 2. अनसूया, 3. सावित्री, 4. जानकी, 5. सती, 6. द्रौपदी, 7. कण्णगी, 8. गार्गी, 9. मीरा, 10. दुर्गावती

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में विचार एवं सुझाव

मेरा मानना है कि यह योजना बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ अपनी संस्कृति के साथ भी जोड़े रखेगी और जब ये बच्चे युवा होंगे तो हमारी सनातन संस्कृति के ध्वजवाहक साबित होंगे जो कि अच्छे समाज के गठन के लिए आवश्यक है। अतः इस पावन कार्य के लिए इस योजना से जुड़े सभी लोग सर्वोच्च सम्मान के अधिकारी हैं।

काजल सिंह

ईवा सिंह, अरुण-ब

सरस्वती शिशु मंदिर के विषय में विचार एवं सुझाव

As I came to know about the School “Saraswati Shishu Mandir”. I was very much interested about the curriculum it offered and up to what extent teachers’ could implement the very existence of “Hindutava” & “Nationalism” among the offspring’s.

Hence after admissions doubts have cease to exist and with its very finest level of teaching & innovation have paved a path for the young generation.

The environment it created for streamlined education and its very course structure is so well detailed that has kept the level of education to apex. It also offered the best value education with very competent cost that a personnel having moderate income could accommodate.

Speaking of teachers; they are very well organized and have captivated the offspring’s in various daily curricular activities by virtue of which students are being illuminated that is shaping their intellect.

I feel that such educational institution should spread their branches’ across the nation and with it, we would be able to make more civilized and responsible society.

Manindra Upadhyay

Laxit Upadhyay Class-3B

मातृ शक्ति गोष्ठी

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद्, नोएडा
विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
योग
विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
वती शिशु मन्दिर
डी-41, सैक्टर-12
गौतमबुद्ध नगर

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद्, नोएडा
विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद्, नोएडा
शिशु वाटिका
विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

फ्लैश कार्ड
द्वारा
चित्रों की पहचान
PICTURE RECOGNITION
BY
FLASH CARDS
ADDITION
51
Tanush Handu Nus-C

कलाशाला
ॐ
कार्यशाला
ॐ असतो मा सद् गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतम् गमय॥

चित्र पुस्तकालय

घर
पूजा घर

सरस्वती शिशु मन्दिर (नोएडा)

ज्ञानोदय

भाषा के सोपान
भाषा विज्ञान
अक्षर ज्ञान
इस ब्रह्मांड की प्रथम ध्वनि ॐ है
Verbal
Linguistics
Written
मौखिक
लिखित
3.सुनना
3.पढ़ना
4.लिखना
2.बोलना
Listening
Reading
Writing
Speaking

पूर्वजों की धरोहर को बचाना है, वस्तु संग्रहित कर इसे सजाना है।
वाद्य यंत्र
CURRENCY
COINS
RUPEES

अ फल नल
आ=ा आम छाता
इ=ि किताब
उ=ु गुलाब धनुष
ऊ=ू सूरज ऊन
ए=े सेब शेर
ऐ=ै सैनिक थैला
ओ=ो घोड़ा तोता
औ=ौ औरत कौवा
अं=ं झंडा हंस
अँ=आँख आँख चाँद
अः=ः छः प्रातः
प्रदर्शनी कक्ष......

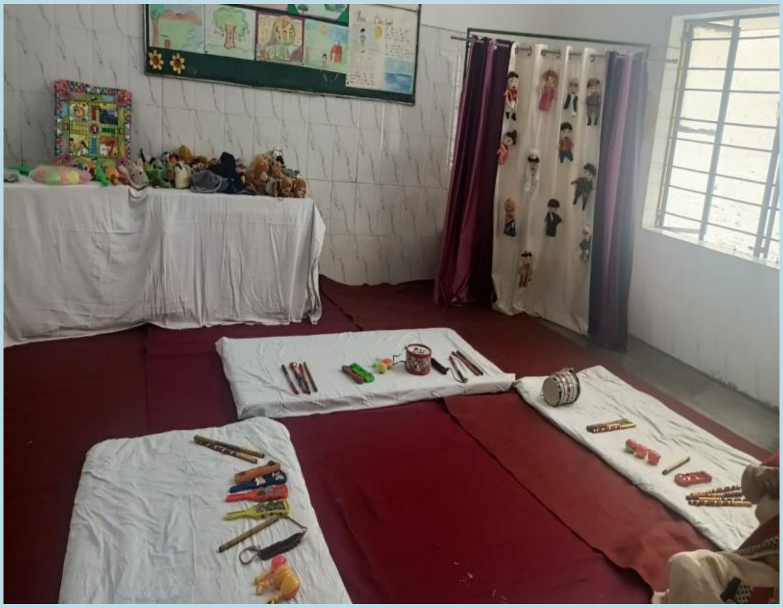

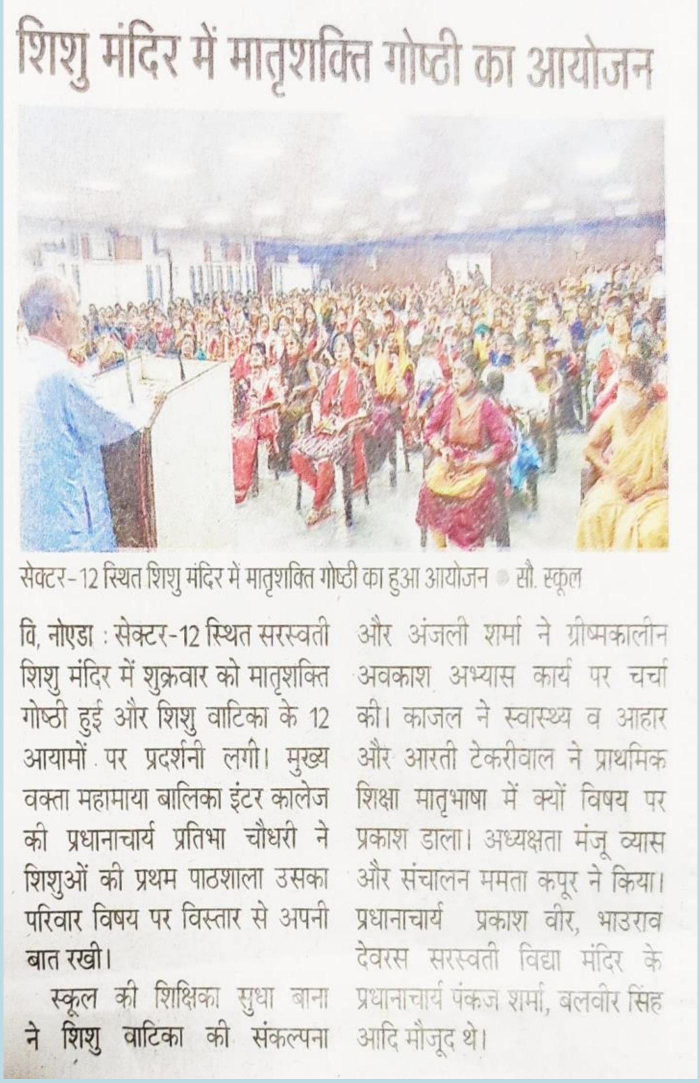

शिशु मंदिर में मातृशक्ति गोष्ठी का आयोजन

सेक्टर-12 स्थित शिशु मंदिर में मातृशक्ति गोष्ठी का हुआ आयोजन • सौ. स्कूल

वि, नोएडा : सेक्टर-12 स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में शुक्रवार को मातृशक्ति गोष्ठी हुई और शिशु वाटिका के 12 आयामों पर प्रदर्शनी लगी। मुख्य वक्ता महामाया बालिका इंटर कालेज की प्रधानाचार्य प्रतिभा चौधरी ने शिशुओं की प्रथम पाठशाला उसका परिवार विषय पर विस्तार से अपनी बात रखी।

स्कूल की शिक्षिका सुधा बाना ने शिशु वाटिका की संकल्पना और अंजली शर्मा ने ग्रीष्मकालीन अवकाश अभ्यास कार्य पर चर्चा की। काजल ने स्वास्थ्य व आहार और आरती टेकरीवाल ने प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में क्यों विषय पर प्रकाश डाला। अध्यक्षता मंजू व्यास और संचालन ममता कपूर ने किया। प्रधानाचार्य प्रकाश वीर, भाउराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य पंकज शर्मा, बलवीर सिंह आदि मौजूद थे।

ब्रह्म मुहूर्त में उठने के नौ लाभ

समाज का कल्याण हो तथा प्रत्येक व्यक्ति की साधना होकर समाज सात्विक बने और पुनः भारत विश्वगुरु के रूप में जाना जाए इस उद्देश्य से कार्यरत सनातन संस्था का ये लेख प्रस्तुत कर रहे हैं, इस लेख के अंतर्गत हम देखेंगे कि ब्राह्ममुहूर्त में उठने के क्या लाभ होते हैं तथा समाज का प्रत्येक व्यक्ति ब्राह्ममुहूर्त में उठकर किस प्रकार शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ उठा सकता है ।

सर्वप्रथम हम सभी को यह ध्यान में रखना चाहिए कि 'ब्रह्ममुहूर्त' ऐसा शब्द न होकर 'ब्राह्ममुहूर्त' योग्य शब्द है । ब्राह्ममुहूर्त यह सवेरे 3.45 से 5.30 तक ऐसे लगभग दो घंटों का होता है । इसे रात्रि का 'चौथा प्रहर अथवा 'उत्तररात्रि' भी कहते हैं । इस काल में अनेक बातें ऐसी होती रहती हैं कि जो दिनभर के काम के लिए लगने वाली ऊर्जा प्रदान करती हैं । इस मुहूर्त पर उठने से हमें एक ही समय पर 9 लाभ मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं :

अधिक प्रमाण में प्राणवायु प्राप्त होना: इस काल में 'ओजोन' नामक वायु पृथ्वी के वातावरण की सबसे निचली सतह में अधिक प्रमाण में आई होती है । ओजोन में मानव को श्वसन के लिए आवश्यक प्राणवायु (ऑक्सीजन) अधिक प्रमाण में होती है । इसलिए इस काल में उठकर दाईं नासिका से गहरी दीर्घ सांसें लेने पर रक्त शुद्धि होती है । रक्त में ऑक्सीजन की मात्रा बढने से हिमोग्लोबिन में सुधार होता है। इसलिए 90 प्रतिशत रोगों से मुक्ति मिलती है ।

तारे होने तक उठना चाहिए: इस काल में मंद प्रकाश होता है । आंखें खोलने पर एकदम तेज प्रकाश आंखों पर पडने से कुछ समय तक हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता । ऐसा बार-बार होते रहने से आंखों में विकार आना आरंभ हो जाता है और दृष्टि क्षीण हो सकती है । वैसा न हो, इसके लिए तारे आकाश में दिख रहे हों, उस समय तक उठ जाना चाहिए ।

अपानवायु का कार्य सुलभता से होना : इस काल में पंचतत्त्वों में से वायु तत्त्व अधिक मात्रा में कार्यरत होता है और मानवीय शरीर में अपानवायु कार्यरत होती है । अपानवायु मलनिःसारण एवं शरीरशुद्धि का कार्य करती है । इस वायु के कार्यरत रहते हुए मल बाहर निकालने का कार्य सहजता से हो सकता है । जोर लगाने की आवश्यकता पडने से धीरे-धीरे मूलव्याध होने की संभावना होती है । मूलव्याध न हो और उत्तम शरीरशुद्धि हो, इस हेतु इसी काल में मलनिःसारण करना चाहिए, इसके साथ ही इस समय बडी अंतडियों में ऊर्जा कार्यरत होती है ।

ब्राह्ममुहूर्त पर शरीर से बाहर नवद्वारों द्वारा गंदगी बाहर निकाल देने का महत्त्व : अपने शरीर में दिनभर एकत्र हुई गंदगी 9 स्थानों से बाहर निकलती है । 2 आंखें, 2 नासिकाएं, 2 कान, 1 मुंह, 1 मूत्रद्वार और 1 गुदद्वार, ऐसे इन 9 स्थानों को नवद्वार कहते हैं । रात को इन 9 स्थानों पर गंदगी जमा हो जाती है । इस गंदगी में अनेक जीवाणु और विषाणु होते हैं, जो रोग उत्पन्न कर सकते हैं । इन जीवाणु और विषाणु को यदि सूर्यप्रकाश मिल जाए तो वे अधिक प्रमाण में बढ सकते हैं और हम बीमार पड सकते हैं । ऐसा न हो, इसलिए ब्राह्ममुहूर्त पर उठकर यह गंदगी शरीर से बाहर निकाल देनी चाहिए ।

ब्राह्ममुहूर्त पर स्नान करने का महत्त्व: सूर्योदय से पहले ब्राह्ममुहूर्त पर स्नान करने से त्वचा के रंध्र खुल जाते हैं । इससे शुद्ध हवा अंदर जाती है और सर्व अवयवों को शुद्ध प्राणवायु मिलने से संपूर्ण शरीर दिनभर के काम के लिए तरोताजा हो जाता है । दिनभर काम करने पर भी हम एकदम उत्साही रहते हैं ।

मस्तिष्क में स्मरणशक्ति सहित अन्य शक्ति केंद्र जागृत होना: इस काल में जप करने से मस्तिष्क की स्मरण शक्ति के साथ अन्य शक्ति केंद्र भी जागृत होते हैं । इस अवसर पर विद्याध्ययन करने से अन्य समय की तुलना में अधिक काल तक स्मरण में रहता है ।

ब्राह्ममुहूर्त पर शरीरशुद्धि करने की आवश्यकता: सूर्योदय के समय अनेक प्रकार की आरोग्यदायी तरंगें वातावरण में सूर्य किरणों द्वारा आती हैं । अपनी त्वचा के रंध्र खुले होंगे, तो वे अवशोषित हो जाती हैं । उसके लिए ब्राह्ममुहूर्त पर उठकर शरीरशुद्धि करनी चाहिए ।

साधना करने से सप्तचक्र जागृत होना: इस काल में मंत्रजप साधना करने से सप्त चक्र जागृत होते हैं; इसलिए कि इस मुहूर्त पर वातावरण शुद्ध होने से अधिक प्रमाण में कंपन निर्माण होकर इससे कुंडलिनी की जागृति होती है ।

पुण्यात्मा एवं सिद्धात्माओं से मार्गदर्शन मिलना: इस मुहूर्त पर अनेक पुण्यात्मा एवं सिद्धात्मा परलोक से पृथ्वी तल पर आए होते हैं । इन पुण्यात्माओं और सिद्धात्माओं से हम साधना द्वारा मिलकर उत्तम मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं ।

ऐसे 9 लाभ हम ब्राह्ममुहूर्त पर उठकर स्नानादि कर्म करने से प्राप्त कर सकते हैं ।

कु. कृतिका खत्री

सनातन संस्था, दिल्ली (संपर्क: 9990227769)

NEP (National Education Policy) कार्यशाला

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर
NATIONAL
EDUCATION
POLICY 2020

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर
स्वयमेव मृगेन्द्रता

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

ECCE क्या है
F.L.N
प
ध
T
पौधा

दिनांक- 21.05.2022 को विद्यालय प्रबन्ध समिति व आचार्य परिवार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) पर आयोजित कार्यशाला।

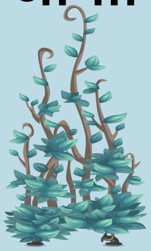

अमृतवाणी

* गुस्सा अक्ल को खा जाता है ।

* अहंकार मान को खा जाता है ।

* चिंता आयु को खा जाती है।

* रिश्वत इंसाफ को खा जाती है ।

* लालच ईमान को खा जाता है ।

*मनुष्य को सम्मान उसकी योग्यता, गुरुता, कार्यक्षमता और उपयोगिता के आधार पर मिलता है। पात्रता के अभाव में किसी को सम्मान मिलने की आशा नहीं बांधनी चाहिए। अहंकारवस कई व्यक्ति पात्रता न होते हुए भी दूसरों से भारी सम्मान की आशा करते रहते हैं और जब वह नहीं मिलता है तो दूसरों को दोष देने लगते हैं। उन्हें अपना विरोधी, शत्रु या ईर्ष्यालु मानने लगते हैं। अतः पहले अपने में पात्रता का विकास करें।

* गीता विवेकरूपी वृक्षों का एक अपूर्व बगीचा है। यह सब सुखों की नींव है। सिद्धांत-रत्नों का भंडार है। नवरसरूपी अमृत से भरा हुआ समुद्र है। खुला हुआ परमधाम है और सब विद्याओं की मूलभूमि है।

- संत ज्ञानेश्वर

* संसार में ऐसा कोई नहीं हुआ है, जो मनुष्य की आशा का पेट भर सके। मनुष्य की आशा समुद्र के समान है; वह कभी भरती ही नहीं।

- महर्षि वेदव्यास

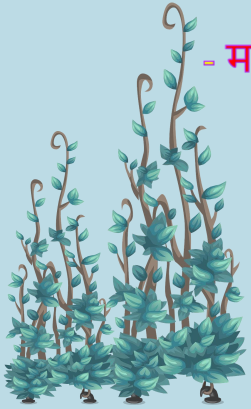

बच्चों का कोना

चलो खोज निकालें!

एकात्मता स्त्रोत का एक श्लोक दिया गया है । इसमें प्राचीन 10 नारियों के नाम सम्मिलित हैं । उन्हें ढूंढ कर अंकित करें।

अरुंधत्यनसूया च सावित्री जानकी सती ।
द्रौपदी कण्डगी गार्गी मीरा दुर्गावती तथा।।

		अ	रुं	ध	ती		
	अ	न	ध्या	क	सा	स	
गा	क	सू	म्ह	पु	वि	र	त
र्गी	ण्य	या	मी	रा	त्री	स्व	जा
ष्णा	गी	ण्ड	द्वा	द्रौ	प	दी	न
ह	र	प्र	मा	र्गी	म	ना	की
	य	ग	सू	न	स	न	
		दु	र्गा	व	ती		

प्रश्न –

1. भूमि कन्या किसे कहा जाता है?

2. द्रौपदी किसकी कन्या थी?

3. उपनिषद पर बहस करने वाली विदुषी कौन थी?

(उत्तर अन्य पेज पर हैं ।)